Toppersnotes
Unleash the topper in you

HCS

हरियाणा लोक सेवा आयोग

Haryana Public Service Commission

भाग – 1

भारतीय संस्कृति और समाज

SIERRA INNOVATIONS

विषय-सूची

1.	भारतीय संस्कृति	1
2.	विरासत	3
3.	इंडो-इस्लामिक स्थापत्य कला	13
4.	शिल्प कला	18
5.	मूर्ति कला	20
6.	वस्त्र निर्माण	22
7.	चित्र कला	24
8.	नृत्य कला	32
9.	संगीत-गायन	36
10.	रंगमंच	38
11.	साहित्य	40
12.	प्राचीन भारत	46
13.	वैदिक काल	53
14.	महाजनपद काल	57
15.	मौर्य साम्राज्य	67
16.	मौर्योत्तर काल	72
17.	गुप्त काल	78
18.	गुप्तोत्तर काल	84
19.	पूर्व मध्य काल	86
20.	मध्य काल	90

भारतीय समाज

1. भारतीय संस्कृति का परिचय 94

2. भारतीय समाज का परिचय 95

3. जाति व्यवस्था 103

4. वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव 111

5. भारत में विवाह 116

6. भारत में परिवार-संयुक्त परिवार 120

7. सरोगेसी 122

8. भारत में धर्म 125

9. भारत में जनजाति 136

10. नगरीकरण, समस्याएं एवं समाधान 153

11. भारत में प्रवास 157

12. विकास संबंधी मुद्दे 165

13. महिला, महिला संगठन व आंदोलन 171

14. भारत में विविधता 179

सारांशित

1. प्राचीन भारत 182

2. मध्यकालीन भारत 268

3. आधुनिक भारत 298

Toppersnotes
Unleash the topper in you

भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति में :- प्राचीन काल से आधुनिक काल तक कला के रूप
साहित्य एवं वास्तुकला के मुख्य पहलू

1. संस्कृति एवं सभ्यता
2. विरासत एवं उसका संरक्षण
3. कला के विविध रूप

1. वास्तुकला/स्थापत्य कलाः- स्तूप, चैत्य, विहार, मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा, सिनेगांव (यहूदियों का पूजा स्थल)
2. शिल्पकलाः- स्तम्भ कला, मूर्तिकला (गांधार शैली-मथुरा शैली-अमरावती शैली)
3. चित्रकलाः-
   - प्रागैतिहासिक चित्रकला
   - बौद्ध-जैन चित्रकला
   - अजंता-एलौरा चित्रकला
   - राजपूत चित्रकला
   - मुगल चित्रकला
   - दक्कनी एवं पहाडी चित्रकला
   - स्थानीय चित्रकला
   - आधुनिक चित्रकला

4. नृत्य एवं संगीत :- शास्त्रीय नृत्य
   - लोक नृत्य
   - गायन एवं वादन
   - रंगमंच

5. भाषा और साहित्यः- संस्कृत, तमिल, तेलगू, उर्दू, गजल, असमी
6. धर्म-दर्शन

संस्कृति- मानवनिर्मित

- भौतिक → मूर्त
  - → भवन
  - → परिवहन के साधन
  - → सुविधाओं के साधन
- अभौतिक → अमूर्त
  - → खान-पान
  - → रहन-सहन के तरीके
  - → विचार, धर्म, दर्शन

संस्कृति और सभ्यता

पर्यावरण का मानव निर्मित भाग संस्कृति है। संस्कृति मानव जीवन और समाज को जानने और समझने में सहायक होती है। वस्तुतः किसी समाज में गहराई तक व्याप्त/गुणों का समग्र नाम संस्कृति है। यह किसी समाज के दीर्घकाल तक अपनाई गई पद्धतियों का परिणाम है।

मनुष्य स्वभावतः एक प्रगतिशील प्राणी है। वह अपनी बुद्धि विवेक के माध्यम से चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थितियों को निरंतर सुधारता चलता है। ऐसी प्रत्येक जीवन पद्धति, रीति-रिवाज, नवीन अनुसंधान जिससे मनुष्य पशुओं के दर्जे से ऊपर उठता है सभ्यता कहलाती है।

सभ्यता से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है जबकि संस्कृति मानसिक क्षेत्र की प्रगति को दर्शाती है। वस्तुतः मनुष्य केवल भौतिक परिस्थितियों को ही सुधार करके ही संतुष्ट नहीं हो जाता (केवल खाद्य) आवश्यकताओं की पूर्ति से ही तृप्त नहीं हो जाता। दरअसल शरीर के साथ मन और आत्मा भी है और इसको संतुष्ट करने के लिए मनुष्य जो विकास करता है उसे संस्कृति कहते है। सौन्दर्य की खोज करते हुए वह संगीत, साहित्य, मूर्ति, चित्र, स्थापत्य आदि अनेक कलाओं का विकास करता है।

सामान्यतया संस्कृति के दो पक्ष होते है (1) अभौतिक (2) भौतिक
अभौतिक संस्कृति को ही संस्कृति के नाम से और भौतिक संस्कृति को सभ्यता के नाम से जाना जाता है।

संस्कृति जहाँ आन्तरिक है, जिसमें विचार, कलात्मक अनुभूति, धार्मिक आस्थाएं, रीति-रिवाज का समावेश होता है जबकि सभ्यता बाह्यय वस्तु है। इस तरह भिन्नताओं के होते हुए भी सभ्यता और संस्कृति एक दूसरे से अनन्त संबंध रखते है और एक दुसरे को प्रभावित करते है।

विरासत

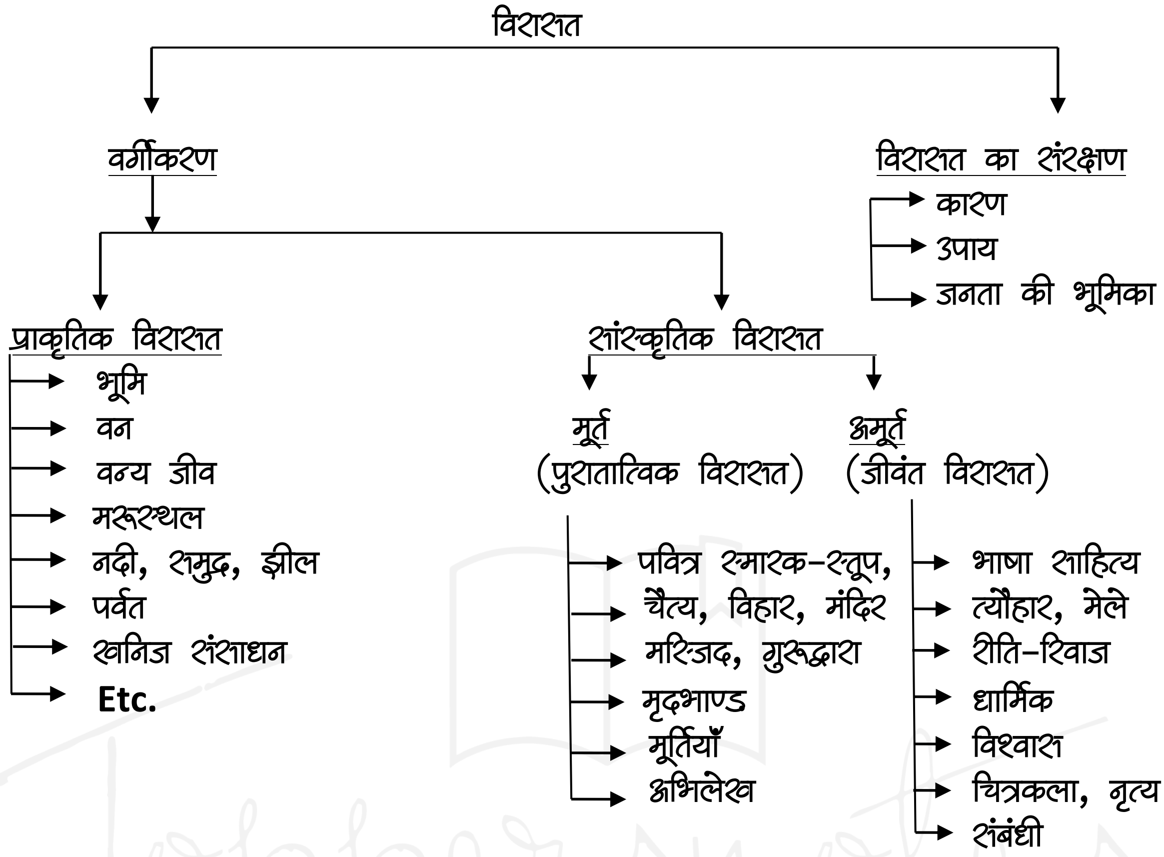

विरासत का अर्थ:-

विरासत वह है जो हमें पूर्वजों से प्राप्त हुई है और हमारे चारों ओर विद्यमान है । यह प्राकृतिक अथवा निर्मित है । यह एक ओर किसी स्थान, क्षेत्र अथवा देश तो दूसरी ओर एक परिवार, समुदाय एवं लोगों की विशिष्टता और पहचान है ।

वर्गीकरण:-

विरासत को प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के रूप में बाँटा जा सकता है ।

प्राकृतिक विरासत:-

प्राकृतिक विरासत में प्राकृतिक विशेषताएं जैसे-भूमि, वन, मरूस्थल, वन्य जीव, नदी, समुद्र, ऋतुएं, खनिज संसाधन आदि सम्मिलित है । भारत की ऋतुओं की विविध भूमि प्रकारों एवं जीव-जन्तुओं की विविधता ने देश की सांस्कृतिक विरासत के निर्माण को प्रभावित किया । इस तरह भारतीय संस्कृति, प्रकृति, पर्यावरण एवं लोगों के बीच निकट संबंधो का परिणाम है ।

पर्वत, नदियां, पशु-पक्षी, वृक्ष हमारी लोककथाओं, पौराणिक कथाओं एवं कला के अंग रहे है । पंचतंत्र की प्रसिद्ध कहानियों अथवा बौद्ध धर्म की जातक कथाओं में पशु-पक्षी महत्वपूर्ण चरित्र है । देश के विभिन्न स्थानों की लोककथाओं में पशु-पक्षी का प्रयोग, विषय वस्तु के अर्थ और विचार को स्पष्ट करने के लिए किया गया है । प्रकृति की शक्तियों को दैवीय रूप देना भारतीय संस्कृति का अंग रहा है । जैसे-गंगा-जमुना की पूजा, पीपल, तुलसी जैसे पेड-पोधों को पवित्र माना जाना । भारतीय शास्त्रीय एवं लोकसंगीत में प्रकृति एवं ऋतुओं के साथ गहरे संबंध देखे जा सकते है । "बारहमासा ऋतुओं के चक्र को दर्शाती है । इस बारहमासा के आधार पर नायक-नायिका के मनोदशा का उल्लेख साहित्य में

हुआ है । हमारी चिकित्सा पद्धतियाँ जैसे- आयुर्वेद पूर्णतः प्रकृति पर ही निर्भर है । इस दृष्टि से प्राकृतिक विरासत एवं सांस्कृतिक विरासत के बीच घनिष्ठ संबंध देखा जा सकता है ।

<u>सांस्कृतिक विरासत</u> :-

मनुष्य की अपनी योग्यता, कौशल और कलात्मक प्रतिभा के बल पर की गई रचना है । यह विभिन्न धार्मिक और सामाजिक परम्पराओं का परिणाम है । सांस्कृतिक विरासत को मूर्त एवं अमूर्त वर्ग में बांटा जा सकता है । ''मूर्त विरासत'' पुरातात्विक विरासत भी कही जाती है, इसमें पुरातात्विक स्मारक अवशेष जैसे - भवन, किले, सिक्के, मूर्तियाँ, अभिलेख, मृदभाण्ड आदि सम्मिलित है ।

अमूर्त विरासत में विचारों से लेकर परम्पराओं तक रहन-सहन के ढंग, भाषा, व्यवहार आदि सम्मिलित इन परम्पराओं व विचारों का प्रसार एक क्षेत्र से दुसरे क्षेत्र तक होता है । इन सब से हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक सुंदर और समृद्ध रंगीन चित्र बनता है । वस्तुतः यह अनेक विचार और विश्वासों का मिश्रण ही हमारी संस्कृति को सामासिक संस्कृति बनाता है । विभिन्न भाषाएं जैसे- संस्कृत, पालि, प्राकृत, तमिल, तेलगू, फारसी आदि प्रचलित रही तो ब्राम्ही, खरोष्टी, अरमाइक लिपियाँ भी मौजूद रही। इतना ही नहीं नृत्य संगीत के विभिन्न रूप, चित्रकल्प इसी सांस्कृतिक विरासत के अंग है । इन्ही अर्थो में भारतीय संस्कृति को ''अनेकता में एकता से युक्त कहा जाता है ।''

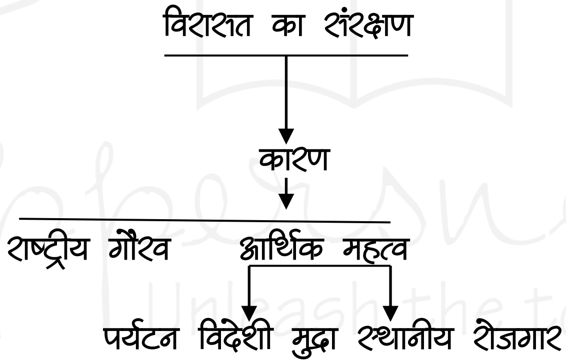

हमारी विरासत हमारी राष्ट्रीय पहचान का दर्पण है । अतः इसका संरक्षण आवश्यक है । वस्तुतः देश एवं लोगों की पहचान को दर्शाती है । व्यक्ति अपनी विरासत के साथ अपनी पहचान को जोडता है जो उसे गौरव प्रदान करती है । अतः इस गौरव की प्रेरणा का संरक्षण आवश्यक है ।

पारम्परिक कलाओं एवं हस्तकलाओं को बचाए रखने एवं संरक्षण से ही इनकी निरन्तरता संभव है । हमारा विशाल पर्यटन उद्योग भी विरासत के दम पर चल रहा है । हमारी विरासत पर्यटकों को हमारे देश की ओर आकर्षित करती है और देश के लोगों को एक भाग से दूसरे भाग तक जाने के लिए प्रेरित करती है । इस तरह यह राष्ट्रीय एकीकरण के साथ-साथ उस क्षेत्र के लोगों के लिए आर्थिक लाभ भी देती है तो साथ ही विदेशी मुद्रा प्राप्ति का साधन बन जाती है ।

विरासत के लिए चुनौतियांः-

समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बचाए और बनाए रखना एक बडी चुनौती है । वस्तुतः प्राकृतिक विरासत चाहे भूमि हो या समुद्र, जंगल या मरूस्थल, वनस्पतियां एवं पशु-पक्षी सभी को समुचित विकास योजना के अभाव एवं निरंतर दुरूपयोग के कारण खतरा है ।

भूमंडलीकरण के कारण होने वाले तीव्र परिवर्तनों ने विरासत के लिए चुनौतियां प्रस्तुत की है ।

पर्यटन में हुई अनियंत्रित वृद्धि ने भी चुनौतियां बढाई है । पर्यावरण और विरासत के संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता का अभाव है ।

विरासत के प्रति अवहेलनापूर्ण रवैये ने भी चुनौतियां बढाई ।

विरासत के संरक्षण के उपायः-
संविधान निर्माताओं ने संविधान में विरासत के संरक्षण के लिए नागरिकों का कर्तव्य भी बताया है कि "हमारी सामासिक संस्कृति की समृद्ध विरासत का सम्मान एवं संरक्षण करे, वनों, झीलों, नदियों एवं वन्य सहित पर्यावरण को बचाए और उसमें सुधार करे" तथा प्राणियों के लिए करूणा का भाव रखे ।

संविधान में उल्लेखित है कि राष्ट्रीय महत्व के प्रत्येक स्मारक कलात्मक या ऐतिहासिक स्थल तथा वस्तुओं को खराब होने, नष्ट होने, हटाने, बेचने या निर्यात से बचाना राज्य का दायित्व होगा।
1952 में "भारतीय वन्य जीव बोर्ड" की स्थापना की गई ।

यह सरकार को वन्य जीवों के संरक्षण एवं बचाव के संदर्भ में तथा राष्ट्रीय उद्यान, पक्षी विहार एवं चिडियाघर के निर्माण के संबंध में परामर्श देता है ।

"वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम 1972" के तहत राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण की स्थापना की गई है ।
पुरातात्विक विरासत को सुरक्षित रखने के लिए संसद ने 'प्राचीन स्मारक एवं पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष अधिनियम 1958' पारित किया। जिसके तहत पुरातात्विक खुदाई से निकली सामग्री, मूर्तिया आदि की सुरक्षा की जाएगी। (यह अधिनियम भारत सरकार के 1904 के अधिनियम का विस्तार है जो कर्जन के समय आया था)। यह अधिनियम यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी व्यक्ति या एजेंसी सरकार की अनुमति के बिना पुरातात्विक खुदाई नहीं कर सकता ।

भारतीय निधि व्यापार अधिनियम 1876 के तहत कहा गया कि अचानक कोई वस्तु मिलने पर लोगों को संबंधित अधिकारियों को सूचित करना अनिवार्य है । यह अधिनियम आज भी लागू है ।

जनता की भूमिका
विरासत के संरक्षण में जनता की भी भूमिका है । हम अज्ञात स्मारकों, स्थलों, पुरावशेषों को पहचानने में सहायता कर सकते है उनकों सूचीबद्ध कर सकते है, उनकी चौकसी कर सकते है ताकि स्मारक क्षतिग्रस्त न हो और कोई चोरी न कर सके तथा अपने आस-पास के लोगों को प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए जागरूक कर सकते है ।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद 1950
इसके अंतर्गत भारत एवं दूसरे देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध एवं आपसी सूझ-बूझ को स्थापित करने के उद्देश्य से इसकी स्थापना की गई यह परिषद भारत सरकार के विदेश मंत्रालय से संबंधित है ।

उद्देश्यः-

सांस्कृतिक क्षेत्र में राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ संबंध स्थापित करना और उनका विकास करना। दूसरे देशों के साथ भारत के सांस्कृतिक रिश्तों से संबंधित नीतियाँ एवं कार्यक्रम तैयार करने और उसके क्रियान्वयन में भागीदारी करना।

प्रमुख कार्यः-

भारत सरकार की ओर से विदेशी छात्रों को छात्रवृतियां देना
विदेशों में प्रमुख सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन करना अर्थात् विदेशों में भारत उत्सव का आयोजन करना व्यवस्था करना।
कलाकार मण्डलियों का आदान प्रदान करना।
''वार्षिक मौलाना आजाद स्मृति व्याख्यान'' और ''मौलाना आजाद निबंध प्रतियोगिता'' का आयोजन करना।
पुस्तकालयों की स्थापना करना।
विदेश मंत्रालय की ओर से परियोजनाएं आरम्भ करना ।

पवित्र उपवन :-

पवित्र उपवन कुछ वृक्षों से लेकर सैकडों हैक्टेयर क्षेत्र में फैले सघन वन होते है । ये जनता के वन है । उपवन किसी न किसी देवता को समर्पित होता हैं । इसमें चराई और शिकार प्रतिबंधित होता हैं ।। इसमें केवल सूखी लकडियों को एकत्रित करने की अनुमति हैं ।

स्तूप पर चित्रों के माध्यम से ''कथानक का अंकन'' किया जाने लगा ।

प्रकार :-

1. शारीरिक स्तूपः- इसमें बुद्ध एवं उनके शिष्यों के अंग अवशेष रखे जाते थे जैसे- दाँत, केश आदि।
2. पारिभौगिक स्तूपः- इस स्तूप में बुद्ध द्वारा उपयोग में लाई गई वस्तुए जैसे- चरण पादुका, भिक्षापात्र आदि रखे जाते थे।
3. उद्देशिका स्तूपः- इसके तहत वे स्तूप आते है जिन्हें बुद्ध के जीवन की घटनाओ से संबंधित या उनकी यात्रा से पवित्र हुए स्थानों पर स्मृति के रूप में बनवाया जाता था जैसे- सारनाथ, लुम्बिनी, बोधगया के स्तूप ।
4. संकल्पित स्तूपः- इस प्रकार के स्तूप श्रद्धालुओं द्वारा विभिन्न बौद्ध तीर्थस्थलों एवं अन्य स्थानों पर बनाए जाते थे। ये आकार में छोटे होते थे ।

प्रमुख उदाहरण :-

सारनाथ एवं साँची में अशोक द्वारा बनाए गए स्तूप प्रसिद्ध है । उसने तक्षशिला में धर्मरक्षिका स्तूप का निर्माण करवाया। मौर्योत्तर काल में शुंग शासन में भरहत स्तूप में वैदिक का निर्माण करवाया गया । नागार्जुनी कोण्डा स्तूप का निर्माण आन्ध्रा में इक्ष्वाकु वंश के शासकों के द्वारा करवाया गया। यहाँ पर बने विशेष प्रकार के चबुतरे/आयक उल्लेखनीय है ।

चैत्य ———— विहार

चैत्य → पूजा गृह

गुहा स्थापत्य का अंग

विहार → भिक्षुओं का निवासस्थल

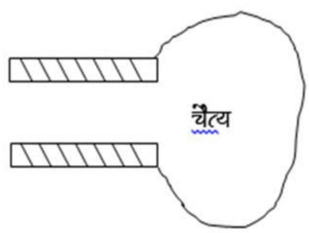

चैत्य -

चैत्य गुफा स्थापत्य के अन्तर्गत चैत्य और विहार का निर्माण किया जाता है। चैत्य बौद्ध और जैन धर्म से संबंधित पूजा गृह होता है। इसे पहाडियों को काटकर बनाया जाता है।

चैत्य एक आयताकार कक्ष के रूप में होता है जिसका अंतिम सिरा अर्द्धवृताकार होता है। महाराष्ट्र स्थित है कार्ले का चैत्य सबसे बडा है। यहां के स्तम्भ अत्यंत आकर्षक है।

विहार :- विहार भी धार्मिक स्थापत्य का अंग है। भिक्षुओं के निवास हेतु पहाडियों को काटकर बनाई गई गुफा को विहार कहा जाता है। उडीसा के शासक खारवेल द्वारा उदयगिरी पहाडी पर बनवाई गई दो मंजिली रानी गुफा इसका प्रमुख उदाहरण है। इसके अतिरिक्त पश्चिम भारत में कार्ले भज, नासिक आदि स्थानों पर बने विहार भी उल्लेखनीय है।
मण्डप (सभाभवन):- जहाँ भक्तगण बैठते है।

मंदिर निर्माण के तत्व -

<u>मंदिर स्थापत्य कला शैली</u>

- नागर → हिमालय से विंध्य
- द्रविड → कृष्णा से कन्याकुमारी
- केसर → विंध्य से कृष्णा नदी तक → नागर + द्रविड

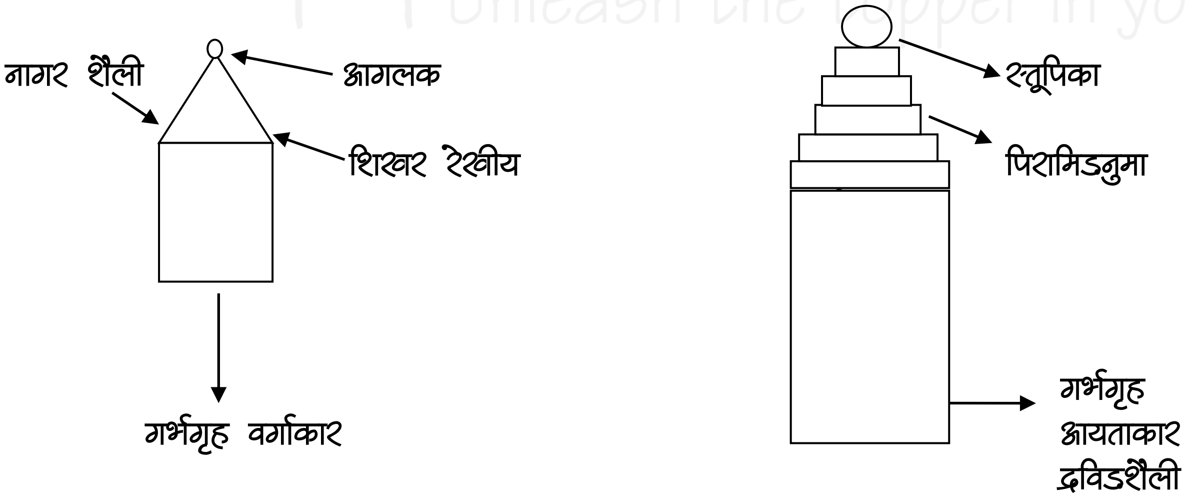

<u>मंदिर निर्माण के अंग</u> -

1. अधिष्ठान :- यह चबूतरेनुमा संरचना होती है। जिसे आधार बनाकार मंदिरों का निर्माण किया जाता है। नागर शैली में अधिष्ठान एवं आवश्यक तत्व है जबकि द्रविड शैली में यह आवश्यक नहीं है।

2. गर्भ गृह :- यह मंदिर का मुख्य/सर्वाधिक पवित्र भाग होता है जिसमें देवी-देवता की स्थापना की जाती है। द्रविड शैली में यह आयताकार होता है जबकि नागर शैली में वर्गाकार होता है।

3. शिखरः- गर्भग्रह के ऊपर की विशाल निर्मित संरचना को शिखर कहते हैं । नागर शैली में रेखीय शिखर और शीर्ष पर आमलक की संरचना होती है जबकि द्रविड शैली में शिखर/विमान पिरामिड के आकार के होते हैं । शीर्ष पर स्तूपिका की संरचना होती है ।

4. गोपुरम :- यह मंदिर का प्रवेश द्वार होता है जो द्रविड शैली का अंग है । गोपुरम की विशालता और भव्यता तत्कालीन आर्थिक राजनीतिक समृद्धि को दर्शाती है ।

5. परकोटाः- द्रविड मंदिरों में गोपुरम बनाए जाने का एक महत्वपूर्ण कारण इसका दीवारों से घिरा होना था । नागर शैली में मंदिरों में यह प्रायः नहीं पाया जाता ।

मंदिर निर्माण शैली

1. नागर शैली :- इस शैली में मंदिर चतुष्कोणीय होते थे और गर्भगृह वर्गाकार होता है । इसके ऊपर रेखीय शिखर जिसके शीर्ष पर आमलक की संरचना होती है । मंदिर में ''सभा भवन'' और प्रदक्षिणापथ भी होता था। उडीसा के मंदिर शुद्ध नागर शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं ।
2. द्रविड शैली :- इस शैली में मंदिर प्रायः अष्ठकोणीय होते थे। गर्भगृह आयताकार तथा शिखर पिरामिड के आकार का उसके शीर्ष पर स्तूपिका की संरचना होती है ।
मंदिर में प्रवेश हेतु गोपुरम अत्यन्त उल्लेखनीय है । द्रविड शैली के ये मंदिर आर्थिक सामाजिक गतिविधियों में संलग्न होते थे। ये निर्माण कार्य एवं व्यापार में हिस्सा लेते थे। बैंकिग गतिविधियों से युक्त होते थे अर्थात कर्ज देना और ब्याज लेना। इनकी यह भूमिका उत्तर भारत के मंदिरों से इन्हें अलग करती है ।

3. बेसर शैली :- मंदिर निर्माण की बेसर शैली में नागर और द्रविड शैली का मिश्रण मिलता है । इस शैली के प्रमुख मंदिरों में होयसल शासकों के द्वारा मैसूर के हैलेबिडु में बनवाया गया होयसलेश्वर मंदिर प्रमुख है ।

गुप्तकालीन मंदिर निर्माण की विशेषताएं :-

गुप्तकालीन मंदिरों का निर्माण एक ऊँचे चबूतरे पर होता था। इस पर चढने के लिए चारों ओर सीढियां बनी होती थी। मंदिर के भीतर एक गर्भगृह होता था । जहाँ पर देवता की मूर्ति स्थापित की जाती थी । गर्भगृह में एक प्रवेशद्वार होता था जो अलंकृत होता था और इसके चारों ओर घूमने के लिए प्रदक्षिण पथ होता था ।
मंदिर की छत प्रायः समतल होती थी । कभी शिखर युक्त मंदिर भी बनते थे। जैसेः- देवगढ का दशावतार मंदिर (झांसी) मंदिर मुख्यतः पत्थर से बनते थे किंतु कुछ एक मंदिर ईंट से भी बनाए गए जैसे- कानपुर का भीतरगांव मंदिर
मंदिर का भीतरी भाग सादा होता था और चौखट पर ''शंख'' का चिन्ह बना होता था। गुप्तकालीन मंदिर ''नागर शैली'' का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

उडीसा मंदिर समूहः-

1. जगमोहन - मंडप
2. पिष्ठ - अधिष्ठान (चबूतरा)
3. मस्तक - शीर्ष - आमलक
4. मण्डी - शिखर
5. देवल/देअल - गर्भगृह

उडीसा के प्रमुख मंदिरों में पुरी के निकट कोणार्क सूर्य मंदिर है । यह अश्व द्वारा खींचे जाने वाले और विशाल पहियों वाले सूर्यदेव के आकाश रथ की परिकल्पना पर आधारित है । इस मंदिर में विभिन्न चित्रों से अलंकरण मिलता है जो पृथ्वी पर जीवन के आनंद और सूर्य की ऊर्जा प्रदायी शक्ति को दर्शाता है इसे "ब्लैक-पैगोडा" के नाम से भी जाना जाता है । इसका निर्माण नरसिंह देव ने किया था।

खजुराहों मंदिर समूह

इनका निर्माण मध्यप्रदेश, बुन्देलखण्ड में चन्देल शासकों के द्वारा 10वीं-11वीं सदी में किया गया। यह मंदिर नागर शैली के अंर्तगत बने है । यह मंदिर समूह शैव, वैश्णव एवं जैन धर्म से संबंधित है इसलिए विद्वान फर्ग्यूसन ने कहा कि "खजुराहो के मंदिर साम्प्रदायिक सौहार्द की प्रेरणा से निर्मित हुए है ।"

विशेषताएं :-

- इन मंदिरों का निर्माण खुले स्थानों पर हुआ है । इनके चारों ओर कोई दीवार नहीं मिलती।
- मंदिर एक ऊँचे अधिष्ठान पर बनाया गया है, जहाँ भव्य शिखर एवं जालीदार खिडकियों का निर्माण किया गया है ।
- मंदिर के शिखर के ऊपर आमलक तथा कलश की संरचना मिलती है ।
- मंदिर के प्रवेशद्वार को सजाया गया है ।
- मंदिर पंचयातन शैली में मिलते है । (इसके तहत गर्भगृह के चारो ओर 4 अतिरिक्त देवालय बन गए है ।)
    1. साम्प्रदायिक सौहार्द का तात्पर्य
    2. खजुराहो मंदिर की विशेषताएँ
- प्रमुख मंदिर है :- कंदरिया महादेव मंदिर
  लक्ष्मण मंदिर
  चतुर्भुज मंदिर / पार्श्वनाथ मंदिर

खजुहारो के मंदिर वैश्विक विरासत की दृष्टि से अत्यन्त महत्तवपूर्ण है । यह मंदिर वास्तुकला के साथ-साथ मूर्तिकला का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते है ।

राजस्थान-गुजरात मंदिर समूह -

इस समूह के मंदिर भी नागर शैली से संबंधित है । आबू पर्वत के पास "दिलवाडा जैन मंदिर" स्थानीय विशेषताओं को शामिल करता है । मंदिर निर्माण में संगमरमर का प्रयोग हुआ है । मंदिर में गुम्बद एवं प्रवेशद्वार उल्लेखनीय है । प्रवेशद्वार पर "नौग्रहों का अंकन" इसकी खास विशेषता है । यहां छत के केन्द्रीय भाग में बने हुए कोष्ठक "मेहराब" की संरचना प्रतीत होते है जबकि वास्तव में मेहराब का प्रयोग नहीं किया गया है ।

इसी तरह गुजरात में पाटन स्थित संगमरमर का मंदिर नागर शैली से युक्त है ।

दक्षिण भारत की मंदिर निर्माण शैली/क्षेत्रीय स्थापत्य

↓

पल्लव कला शैली

↓

द्रविड शैली

1. महेन्द्रवर्मन शैली
   → मण्डप मंदिर → सादा मंदिर

2. नरसिंह वर्मन शैली (मामल्ल मंदिर)
   मंडप + रथ मंदिर
   एकाश्मक मंदिर
   -सप्त पैगोडा

3. राजसिंह शैली
   ईमारती मंदिर (ईंट से मंदिर)

4. नंदिवर्मन शैली
   मंदिर छोटे-छोटे

5. पल्लव कला :-
   पल्लव कला मंदिर स्थापत्य की द्रविड शैली से संबंधित है । पल्लवों ने वास्तुकला को ''काष्ठकला'' से मुक्त किया और पहाडियों को काटकर मंदिर निर्माण की नई शैली का विकास किया ।

पल्लव मंदिर निर्माण की शैलियाँ :-

1. महेन्द्रवर्मन शैलीः- इसमें मुख्य रूप से चट्टानों को काटकर मण्डप की संरचना बनाई गई। यह मंदिर सादगीपूर्ण होते थे। यहां पर बनी पंचपाण्डव गुफा मंदिर में एक तरफ श्री कृष्ण को गोवर्धन पर्वत उठाए हुए दिखाया गया है तो दूसरे में उन्हें गाय दुहते हुए दिखाया गया है ।

2. मामल्ल शैलीः- इस शैली में मण्डप के साथ-साथ रथ का निर्माण किया गया। ये रथ मंदिर एकाश्मक है (एक ही पहाडी को काटकर बनाए गए) इस रथ मंदिरों को सामूहिक रूप में सप्त पैगोडा कहा जाता है जिसमें प्रमुख है - धर्मराज रथ (सबसे बडा है और शासक नरसिंह वर्मन की मूर्ति बनी है), अर्जुन रथ, भीम रथ, गणेश रथ, द्रौपदी रथ (सबसे छोटा) इन मंदिरों में देवी देवताओं और राजाओं की प्रतिमा मूर्तिकला का उत्कृष्ट रूप प्रस्तुत करती है । इस शैली का प्रमुख केन्द्र महाबलीपुरम था।

3. राजसिंह शैलीः- इस शैली में मंदिर ईंट और पत्थरों से बनने लगे अर्थात ईमारती मंदिर बनने लगे जैसे- कांचीपुरम का कैलाशनाथ मंदिर इसमें शिव-पार्वती नृत्य पाया गया। यह मंदिर शिव को समर्पित है । इसमें मूर्ति का मुख शिव के जनक, पालक एवं संहारक के रूप में दर्शाते है ।

4. नंदीवर्मन शैली - इस शैली में मंदिर अत्यंत छोटे बनने लगे जो पल्लवों के राजनीतिक पतन को दर्शाता है ।

चोल स्थापत्य कला

चोल मंदिर स्थापत्य की द्रविड शैली का प्रतिनिधित्व करते है यहां द्रविड शैली की भव्यता देखी जा सकती है जिसका आधार पल्लवों ने तैयार किया था। चोलों ने 10वीं 11वीं सदी में दक्षिण भारत में एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया (इसी विशालता का दर्शन मंदिर स्थापत्य में मिलता है)
इन मंदिरों में आयताकार गर्भगृह दिशामिडनुमा शिखर विशाल गोमुख और पूरा मंदिर एक परकोटे से घिरा है ।

प्रमुख मंदिर - तंजौर का वहृदीश्वर मंदिर (निर्माण-राजराज प्रथम)
गंगरेकोण्ड चोलपुरम का वृहृदीश्वर मंदिर - निर्माण - राजेन्द्र वृहृदीश्वर मंदिर में एक ही पत्थर से बनी विशालकाय नंदी की प्रतिमा है जो देश में दूसरी सबसे बडी नंदी की प्रतिमा है पहली आंध्रा के लेपाणी मंदिर में है ।
चोल मंदिरों के संबंध में फर्ग्यूसन ने कहा कि चोल कलाकार राक्षस की तरह सोचते है । और जौहरी की तरह तराशते है ।

चालुक्य कला (बेसर शैली)

चालुक्य कला बेसर शैली का प्रतिनिधित्व करती है । इसे कर्नाटक शैली भी कहते है क्योंकि इसका निकास इसी क्षेत्र में हुआ किन्तु इस शैली को मौलिक नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसमें द्रविड और नागर शैली का मिश्रण दिखाई पडता है ।
इस कला का प्रमुख केन्द्र एहोल, वातापी, पद्धकूल है । पद्दकाल में बना विरूपक्ष मंदिर उल्लेखनीय है ।

राष्ट्रकूट कला

राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने एलोरा में कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण करवाया। इसमें द्रविड शैली के विमान मणमगोपुरम उल्लेखनीय है । इस मंदिर की खास विशेषता यह है कि इसे बनाने के लिये पहाडी को ऊपर से नीचे की ओर काटते हुये निर्माण किया गया है । एलोरा में ब्राह्मण, बौद्ध और जैन धर्म से संबंधित गुफा मंदिर है ।
राष्ट्रकूट के समय एलीफेन्टा गुफा मंदिर का निर्माण किया गया ।
यह मंदिर शिव को समर्पित है । इसमें मूर्ति मुख शिव को जनक, पालक एवं संहारक के रूप में दर्शाते है । इसके बाहरी प्रांगण में बाजार भी लगता है ।

विजयनगर स्थापत्य कला (1336)

कल्याण मंडप- विशाल व भव्य, स्तम्भों वाला भवन
विजयनगर मंदिर स्थापत्य की द्रविड शैली का प्रतिनिधित्व करता है । कृष्णदेवराय के शासनकाल में बना विठ्ठल स्वामी मंदिर इसका सर्वश्रेष्ठ नमूना है । इन मंदिरों में गोपुरम को रायगोपुरम कहा जाता था। मंदिरों में अम्मन मठ एवं कल्याण मंडप उल्लेखनीय है । अम्मन मठ देवी को समर्पित है जबकि कल्याण मंडप एक विशाल सभाभवन होता है । जिसमें सैकडों स्तम्भ बने होते है । विजयनगर राज्य में बना हुआ

लेपाक्षी मंदिर नन्दी निर्माण के लिए जाना जाता है । यह देश की सबसे बडी एकाश्मक नंदी की प्रतिमा मानी जाती है । विजयनगर साम्राज्य के पतन के पश्चात् वहां नायकों (सांमत) का उदय हुआ। फलतः 17वीं सदी के मध्य में तिरूमलाई नायक के काल में सुन्दरेश्वर मंदिर एवं मीनाक्षी मंदिर का निर्माण हुआ।

तमिलनाडु के मदुरैइ में वैगई नदी के दक्षिण में यह स्थित है । सुन्दरेश्वर मंदिर शिव को समर्पित है और दूसरे मंदिर देवी मीनाक्षी के रूप में उनकी पत्नी को समर्पित है । प्रायः इन मंदिरों को मीनाक्षी मंदिर के नाम से जाना जाता है । मंदिर की दीवारों, स्तम्भों पर अनेक आकृतियां बनी हुई है । मंदिर के पास एक विशाल सरोवर, अनुष्ठानिक प्रयोग हेतु बना था। यह मंदिर सामाजिक आर्थिक जीवन का एक प्रमुख अंग था और अपने स्वरूप में एक शहर जैसा था। इसके बाहरी प्रांगण में बाजार भी लगता था ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

इण्डो इस्लामिक स्थापत्य कला

- विशेषताएँ
- विकास
  - दिल्ली सल्तनत में
  - मुगलकाल में
- क्षेत्रीय स्थापत्य
  - जौनपुर
  - बंगाल
  - मालवा
  - दक्कन

त्राबियत (भारतीय शैली)
↓
बल्ली एवम् शहतीर
+
अलंकरण (फूल-पत्ती)

अरकुएट (इस्लामी शैली)
↓
गुम्बद एवं मेहराब
↓
अलंकरण – अरबी में लिखी कुरान की आयते – कूफी
+
फूल-पत्ती एवं ज्यामितीय प्रतीकों का अंकन

इण्डो व इस्लामिक शैली की इमारतों में समानता – आँगन व जल स्त्रोत की उपस्थिति

<u>दिल्ली – सल्तनत</u>
- → इल्बरी तुर्क (1206–90)
- → कुतुबमीनार

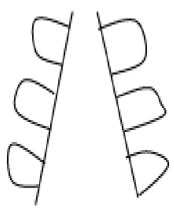

<u>स्टेलेक्टाइट</u>
हनीकोमिंग तकनीक
से ये छिज्जे मीनार से जुडे है।
(चूने का रिसाव होने के बाद मजबूत होना)

खिलजी काल

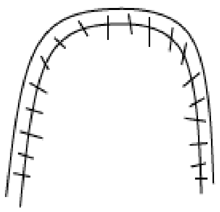

→ घोडे की नाल का आकार को मेहराब
→ अलाई दरवाजा

सैय्यद काल – मकबरों का काल
लोदी काल – चारबाग शैली
(भवन के चारों ओर बाग)

तुगलक स्थापत्य
सलामी का प्रयोग
तीरछी दीवारें ⟶ नींव चौडी हुई भवनो की अधिक मजबूती बनाने के लिए

विशेषताएं– इण्डो–इस्लामिक स्थापत्य की सर्वप्रमुख विशेषता त्राबियत एवं अरकुएट शैली का सुन्दर समन्वय है । भारतीय शैली त्राबियत (बल्ली व शहतीर) तथा इस्लामिक शैली अरकुएट (गुम्बद और मेहराब) कही जाती थी। अरबी लिपि में लिखी गई कुरान की आयतों के साथ फूल–पत्तियों के माध्यम से भवनों की सजावट या अलंकरण की पद्धति अरबस्क कहलाती है । यह इस्लामिक स्थापत्य कला की खास विशेषता है ।

भवन निर्माण सामग्री में पत्थरों का खूब प्रयोग किया गया और पत्थरों को आपस में जोडनें के लिए चूना पत्थर, गारा, जिप्सम का प्रयोग किया गया।
गुम्बद और मेहराब इस्लाम की देन नहीं है वस्तुतः इसकी आरम्भिक संरचना रोम में मिलती है और इसे भारत लाने का श्रेय कुषाण शासकों को दिया जाता है परन्तु भारत में इसे लोकप्रिय बनाने का श्रेय तुर्की शासकों को जाता है ।

गुम्बद और मेहराब की संरचना ने भवनों के विशाल सभा भवन के निर्माण को सहज बना दिया वस्तुतः गुम्बद और मेहराब ने छतों को सहारा देने के लिए बडी संख्या में स्तम्भों की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया। इसके माध्यम से भवनों की विशालता और मजबूती दोनों आई।
चुंकि इस्लाम में प्राणियों के चित्रण को मान्यता प्राप्त नहीं थी अतः अलंकरण में मान्यता प्राप्त नहीं थी अतः अलंकरण में फूल पती एवं ज्यामितीय प्रतीकों का प्रयोग किया गया। जिसके तहत ''कमल'' और ''घण्टे'' का भी प्रयोग हुआ। इस तरह इस्लामिक स्थापत्य कला में अलंकरण क्रम में धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष पहलू शामिल है ।

विकास

दिल्ली सल्तनत काल

1. इल्बरी कालः– कुतुबुद्दीन ऐबक ने सूफी सन्त कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के सम्मान में कुतुबमीनार का निर्माण करवाया जिसे इल्तुतमिश द्वारा पूरा किया गया। आगे फिरोजतुगलक के समय इसकी मरम्मत हुई।
   - यह मीनार शंकु के आकार की है और इसमें बने हुए छज्जे स्टेलेक्टाइट हनीकोमिंग तकनीक से मीनार से जुडे हुए है ।
   - कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर में ''अढाई दिन का झोपडा'' नामक मस्जिद का निर्माण करवाया।

2. खिलजी काल :– अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में ''अलाई दरवाजा'' का निर्माण करवाया। इसमें घोडे के नाल की आकार की मेहराब बनी है । इसमें ''कमल की कली'' की तरह की झालरे मौजूद है जो अलंकरण के लिए है । इसे मार्शल ने, ''इस्लामी स्थापत्य कला'' के खजाने का सबसे बडा हीरा कहा।
3. तुगलक कालः– तुगलक काल में वास्तुकला निर्माण की नवीन शैली सामने आई अब भवन निर्माण में खुरदरे पत्थर, ढालू दीवारे (सलामी) का प्रयोग किया गया। सलामी तुगलक स्थापत्य की खास

विशेषता है और इसका निर्माण भवनों को मजबूती प्रदान करने के लिए किया गया था। दिल्ली के पास तुगलकाबाद में गयासुद्दीन तुगलक ने एक भवन बनवाया। इसकी प्रशंसा करते हुए इब्नबतूता ने कहा कि सूर्योदय के समय यह इतनी तेजी से चमकता है कि इस पर किसी की आंख टिक नहीं पाती।

सैय्यद एवं लोदी काल

सैय्यद शासनकाल में मकबरों का बडी संख्या में निर्माण हुए। अष्ठकोणीय मकबरे इस काल की उल्लेखनीय विशेषता लोदी काल में भवनों को बागों के मध्य ऊंचे चबूतरे पर बनाया गया है जो मुगल काल में ''चारबाग शैली'' के रूप में लोकप्रिय हुआ।

क्षेत्रीय स्थापत्य : -

1. जौनपुर (शर्की शैली)

- जौनपुर में शर्की वंश की स्थापना हुई । इस काल में जौनपुर कला, शिक्षा, साहित्य का केन्द्र बना। इसी संदर्भ में इसे ''पूर्व का सिराज'' कहते है ।
- शर्की शैली में मुख्यतः वर्गाकार स्तम्भ, ढलवा दीवारे और छायादार रास्ते उल्लेखनीय है । साथ ही प्रवेश द्वार की सजावट और उसकी विशालता शर्की शैली की विशिष्टता है जैसे- अटाला मस्जिद, झझरी मस्जिद इत्यादि।
- शर्की स्थापत्य पर तुगलक स्थापत्य का प्रभाव दिखाई पडता है ।

2. मालवा स्थापत्यः-

- यहां की वास्तुकला की खास विशेषता यह थी कि धरातल से प्रवेशद्वार तक बनी हुई भव्य एवं चौडी सीढियाँ और भवनों में रंगीन पत्थरों का प्रयोग किया गया है
- मस्जिदों में मीनारे नहीं है । प्रमुख उदाहरण है- अशर्फी महल, हिंडोला महल, जहाज महल इत्यादि।

3. बंगाल स्थापत्य :-

- बंगाल स्थापत्य में मुख्यतः ईंटों का प्रयोग किया गया है और नुकिले मेहराब बनाए गए है जैसे-अदीना मस्जिद, बारी सोना मस्जिद।

4. दक्कन स्थापत्य-

- दक्कन में 14 से 16वीं सदी के बीच वास्तुकला की जिस शैली का विकास हुआ उस पर तुगलक एवं ईरान की निर्माण कला का प्रभाव दिखाई देता है । बिजापुर में मोहम्मद आदिल शाह का मकबरा जो गोल गुम्बद के नाम से जाना जाता है उल्लेखनीय है । इसकी खास विशेषता इसके अन्दर ध्वनि का गुंजना है ।

मुगल काल

मुगल स्थापत्य कला की विशेषताएं :-

- मुगल स्थापत्य कला में इण्डो-इस्लामिक शैली का सुन्दर समन्वय मिलता है । इसमें बौद्ध, जैन और ईरानी शैलीयों के तत्व मिलते है ।
- भवनों में बलुआ पत्थर और संगमरमर का प्रयोग किया गया।
- संगमरमर एवं बलूआ पत्थरों, हीरे जवाहरातों से की गई। जडावट उल्लेखनीय है जिसे पित्रादुरा के नाम से जानते है ।